Q. Keynes के ब्याज के तरलता अधिमान सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या करें।
Q. ब्याज का नकद पसंदगी सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या करें।

केन्स ने ब्याज का तरलता अधिमान सिद्धान्त का प्रतिपादन अपनी पुस्तक The General Theory of Employment, Interest and money में किया। ब्याज के तरलता अधिमान सिद्धान्त ब्याज के शास्त्रीय सिद्धान्त का सुधार है। ब्याज के शास्त्रीय सिद्धान्त के अनुसार ब्याज नकद त्याग करने के बदले मिलने वाला पुरस्कार होता है जबकि केन्स ने इस मान्यता की आलोचना करते हुए कहा कि ब्याज तरलता त्याग के बदले नहीं बल्कि तरलता पसंदगी के कारण उत्पन्न होता है। केन्स ने बताया की सभी लोग अपने पास मुद्रा तरल रूप में रखना पसंद करते हैं और ब्याज कुछ निश्चित अवधि के लिए तरलता छोड़ने का पुरस्कार होती है। According to J. M. Keynes- Interest is the monetary phenomenon and It is the price which equilibrates the desire to hold wealth in the form of cash with the available quantity of cash.

केन्स के अनुसार ब्याज दर का निर्धारण मुख्यतः दो बातों पर निर्भर करती है- (i) मुद्रा की पूर्ति
(ii) मुद्रा की माँग

P.T.O-

i) मुद्रा की पूर्ति :-

मुद्रा के पूर्ति का तात्पर्य एक निश्चित अवधि के अन्तराल सभी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए देश में उपलब्ध मुद्रा की कुल मात्रा से है। At one side Interest is the function of supply of money. क्योंकि मुद्रा की पूर्ति अधिक होने पर ब्याज की दर कम तथा पूर्ति कम होने पर ब्याज की दर अधिक होती है।

ii) मुद्रा की माँग -

ब्याज की दर का यह दूसरा महत्वपूर्ण निर्धारक है जिसे केन्स ने तरलता पसंदगी नाम दिया है केन्स के अनुसार तरल मुद्रा हमारी जरूरतों को पूरा करता है और हमारी व्याकुलता को शांत करता है। ब्याज की दर इसी व्याकुलता की मात्रा माप होती है।

केन्स के अनुसार लोग तीन कारणों से तरल मुद्रा रखना पसंद करते है

a) Transactions motives -

लेन-देन उद्देश्य का संबंध निजी और व्यापार संबंधी दिन प्रतिदिन की नकद जरूरतों से है। चूंकि हमारे दैनिक जीवन में बहुत तरह की छोटी-मोटी खर्चे जैसे सब्जियाँ खरीदना, रिक्सा भाड़ा, कच्चे माल उद्योग के लिए, मजदूरी भुगतान इत्यादि। इन सभी लेन-देनों के लिए हमें अपने पास मुद्रा तरल रूप में रखना अनिवार्य होता है।

b) Precautionary Motive -

Keynes के अनुसार यह दूसरा मुख्य कारण है जिसके उद्देश्य से लोग अपने पास मुद्रा तरल रूप में रखने की माँग करते है क्योंकि लोगों के जीवन में बिमारी, दुर्घटना, बेरोजगारी, व्यापार में घाटा इत्यादि का सामना कभी भी करना पड़ सकता है इन परिस्थितियों से निकलने या इसमें संभालने के लिए लोग नकद अपने पास रखना पसंद करते है और तरल मुद्रा की माँग करते है।

c) Speculative motive :- सट्टेबाजी उद्देश्य से मुद्रा इसलिए तरल में रखी जाती है ताकि भविष्य में होने वाले बाजार के उतार-चढ़ाव की तुलना करके अधिक लाभ कमाया जाय। लोगों और व्यापारियों के पास मुद्रा जो लेन-देन और सतर्कता उद्देश्य की पूर्ति करके जो बच जाती है उसे वह बांड और प्रतिभूतियों में निवेश कर सट्टे के रूप में लाभ कमाता है। बांड की कीमत और ब्याजदर में विपरीत संबंध होता है,

इस प्रकार हम देखते है कि मुद्रा की पूर्ति मुद्रा की माँग और ब्याज दर में विपरीत संबंध होता है केन्स के अनुसार किसी वस्तु या सेवा की कीमत की तरह ही ब्याज दर का निर्धारण मुद्रा की माँग और पूर्ति के द्वारा उस बिन्दु पर होती है जहाँ दोनों एक दूसरे को काटती है। केन्स के इस ब्याज के तरलता अधिमान सिद्धान्त को हम निम्नलिखित रेखाचित्र के द्वारा स्पष्ट करते है-

प्रस्तुत रेखाचित्र में OX अक्ष पर मुद्रा की कुल उपलब्ध मात्रा और OY अक्ष पर ब्याज दर को दिखाया गया है। चित्र में LL मुद्रा की माँग मात्रा जबकि MQ मुद्रा की कुल पूर्ति रेखा है। चित्र में स्पष्ट है कि मुद्रा की माँग LL मुद्रा की पूर्ति QM को E बिन्दु पर काट रही है अर्थात

E बिन्दु पर संतुलित ब्याज की दर OR है। और यह ब्याज दर तब तक बना रहेगा जब तक कि इसमें कोई परिवर्तन नहीं।

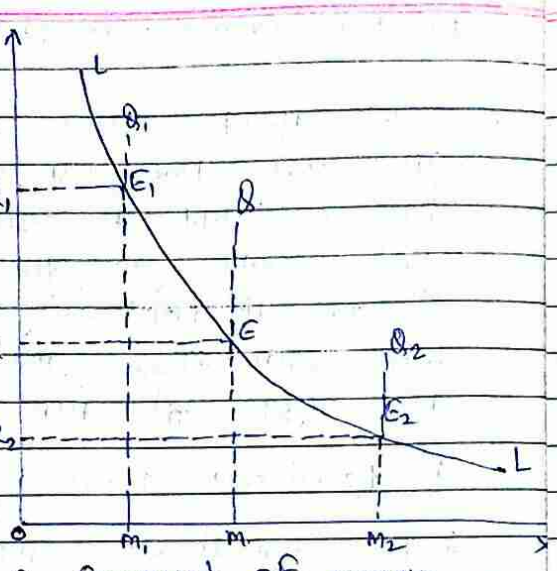

अब यदि मुद्रा की कुल उपलब्ध मात्रा से घटकर Q_1M_1 हो जाती है तो ब्याज दर बढ़कर E_1 बिन्दु पर OR_1 के रूप में निर्धारित होगी और यदि मुद्रा की पूर्ति बढ़कर QM से Q_2M_2 होगी तो निश्चित ही ब्याज की दर OR से कम होकर OR_2 हो जायेगी। इसी तरह मुद्रा की माँग मात्रा में परिवर्तन भी ब्याज दर को प्रभावित करती है। इसप्रकार हम देखते है कि ब्याज दर का निर्धारण करने के लिए मुद्रा की माँग और पूर्ति दोनों का संयोग अति आवश्यक है।

केन्स के ब्याज के तरलता अधिमान के सिद्धान्त की मुख्य आलोचनाएँ इस प्रकार से की जाती हैं -

1 वास्तविक तत्वो की उपेक्षा :-

prof. Hazlitt के अनुसार केन्स ने ब्याज के प्रमुख निर्धारक वास्तविक तत्वों की उपेक्षा की है जैसे- पूँजी की उत्पादकता बचत। वास्तव में ब्याज दर केवल मौद्रिक तत्वों से ही प्रभावित नहीं होती बल्कि वास्तविक तत्व भी ब्याज दर को प्रभावित करते हैं। According to prof. Viner - Without saving there can be no liquidity to surrender.

2. अनिर्धारित सिद्धान्त :-

prof. Hansen ने इसे अनिर्धारित सिद्धान्त कहा है क्योंकि मुद्रा की माँग आय के बिना ज्ञात नहीं की जा सकती है, आय के बिना ब्याज दर और ब्याज दर के बिना आय का निर्धारण नहीं हो सकता इसप्रकार यह उलझाउपन स्थिति पैदा करता है।

3. असंगत सिद्धान्त :-

Keynes के अनुसार तरलता पसंदगी ब्याज दर को बढ़ाती है इस तर्क की आलोचना करते हुए prof. Knight ने कहा कि मन्दी के समय भी तरलता पसंदगी अधिक होती है परन्तु ब्याज की दर कम रहती है। अतः यह असंगत सिद्धान्त है।

4. समय तत्व की उपेक्षा :-
अल्पकालिन और दीर्घकालिन स्थितियाँ भी ब्याज दर को प्रभावित करती है जिसपर Keynes ने ध्यान नहीं दिया।

5. कीमत परिवर्तनों की उपेक्षा :-
Keynes ने मुद्रा की माँग का वर्णन किया है वह कीमत स्तर की स्थिरता की मान्यता पर आधारित है जबकि आलोचकों ने बताया कि कीमतों में परिवर्तन स्वभाविक है। इसलिये ब्याज दर प्रभावित होती है।

6. मुद्रा का अर्थ सही एवं स्पष्ट नहीं -
आलोचकों ने बताया कि Keynes ने मुद्रा अर्थ स्पष्ट नहीं है क्योंकि Keynes ने यह नहीं बताया कि बैंक में रखा धन मुद्रा है कि नहीं।

इस प्रकार हम देखते है कि केन्स के ब्याज के तरलता अधिमान सिद्धान्त की व्यापक आलोचनाएँ हुई है फिर भी केन्स का यह सिद्धान्त ब्याज के शास्त्रीय सिद्धान्त का सुधार प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।